B.A (Hons) Sanskrit
Part - I
Paper - I

डॉ अपर्णा कुमारी
स०प्रा० (गेस्ट फैकल्टी)

कारक-प्रकरण (विभक्ति)

सूत्रों का सोदाहरण व्याख्या

1. कर्ता कारक - प्रथमा विभक्ति

1. प्रातिपदिकार्थ - लिङ्ग - परिमाण - वचनमात्रे प्रथमा ।

निरुतो परिस्थितिकः प्रतिपदिकार्थः मात्रशब्दस्य प्रत्येकं योगः प्रातिपदिकार्थमात्रे लिङ्गमात्राधिक्ये संख्यामात्रे च प्रथमा ।

प्रातिपदिकार्थमात्रे - कृष्णः, नीलः, कृष्णः, श्रीः, ज्ञानम् ।
लिङ्गमात्रे - तटः, तटी, तटम् ।
परिमाणमात्रे - द्रोणो व्रीहिः ।
संख्यामात्रे (वचन) - एकः, द्वौ, बहवः ।

अर्थात् प्रातिपदिकार्थ मात्र में, लिङ्गमात्र की अधिकता में, परिमाणमात्र में और संख्यामात्र में प्रथमा विभक्ति होती है ।

यथा - प्रातिपदिक अर्थ में - कृष्णः, नीलः, कृष्णः, श्री, ज्ञानम्
लिङ्ग अर्थ में - तटः, तटी, तटम् ।
परिमाण अर्थ में - द्रोणो व्रीहिः (परिमाण) द्रोण से मापा हुआ धान
संख्या (वचन) अर्थ में - एकः, द्वौ, बहवः ।

2. सम्बोधने च - सम्बोधन में प्रथमा विभक्ति होती है ।

यथा - हे राम ! , हे कृष्ण !

अतः प्रातिपदिकार्थ से सम्बोधन अर्थ की अधिकता होने पर प्रथमा विभक्ति होती है ।

कर्मकारक - द्वितीया विभक्ति

1. कर्मणि द्वितीया - अनुक्ते कर्मणि द्वितीया स्यात् ।

यथा - हरिं भजति ।

अभिहिते तु कर्मणि प्रथमा । यथा - हरिः सेव्यते । लक्ष्म्या हरिः सेवितः ।

अर्थात् कर्म में द्वितीया विभक्ति होती है । अनुक्त कर्म में द्वितीया विभक्ति होती है । यथा - हरिं भजति । वाक्य में 'हरि' शब्द में द्वितीया विभक्ति है ।
अभिहित कर्म में तो प्रातिपदिकार्थमात्र में प्रथमा ही होती है । अतः - हरिः सेव्यते । लक्ष्म्या हरिः सेवितः । इन दोनों वाक्यों में 'हरि' शब्द में प्रथमा विभक्ति है ।

2. अंतरान्तरेण युक्ते - अन्तरा (बीच में) तथा अन्तरेण (बिना; विषय में, छोड़कर) शब्दों जिससे सन्निकटता प्रतीत होती है, में द्वितीया विभक्ति होती है।

यथा - गङ्गां यमुनां च अन्तरा प्रयागः।
ज्ञानमन्तरेण (ज्ञानं विना वा) नैव सुखम्।

3. अभितः परितः समया निकषा हा प्रतियोगेऽपि - अभितः (चारों ओर), परितः (सब ओर), समया (समीप), निकषा (समीप), हा (धिक्कार) प्रति (ओर, तरफ) के साथ द्वितीया विभक्ति होती है।

यथा - मार्गम् उभयतः वृक्षाः सन्ति (सड़क के दोनों ओर वृक्ष हैं)
विद्यालयं अभितः/परितः मार्गाः सन्ति (विद्यालय के चारों ओर सब ओर मार्ग हैं (सड़क हैं))
ग्रामं समया/निकषा नदी प्रवहति (गाँव के समीप नदी बहती है)
हा नास्तिकं य ईश्वरं न मन्यते (नास्तिक को धिक्कार है, जो ईश्वर को नहीं मानता है।

4. अधिशीङ्स्थासां कर्म -
शीङ्, स्था तथा आस् धातुओं के पूर्व यदि अधि उपसर्ग लगा हो तो इन क्रियाओं का आधार कर्मसंज्ञक होता है।

यथा - भूपतिः सिंहासनम् अध्यास्ते
(राजा सिंहासन पर बैठा है)
शिष्यः आसनम् अधितिष्ठति (शिष्य आसन पर बैठता है)
चन्द्रापीडः मुक्ताशिला-पट्टम् अधिशिश्ये
(चन्द्रापीड मुक्त शिला पर लेट गया)
अध्यास्ते वैकुण्ठे हरिः (हरि वैकुण्ठ में रहता है)

5. कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे -
कालवाची और मार्गवाची शब्दों में द्वितीया विभक्ति होती है, यदि अंत तक पूरे काल या मार्ग का ज्ञान हो।

यथा - रमेशः पञ्च वर्षाणि अधिजगे (रमेश पूरे पाँच वर्षों तक पढ़ा)
क्रोशं गोमती कुटिला (गोमती नदी पूरे एक कोस तक टेढ़ी है)
स मासं व्याकरणं अधीते (वह महीने भर व्याकरण पढ़ता है)